श्री भक्त शिरोमणि देवकीनन्दन चालीसा

।। दोहा ।।

सृष्टि लय पालन करे, अविनाशी सुख धाम।
अखिल विश्व चेतन करे , बाबा गंगाराम ।।
देवकीनन्दन करि कृपा, अपनाओ निज दास।
भक्ति भाव उर में भरो, देवो बुद्धि प्रकाश ।।

।।चौपाई।।

जय जय भक्त शिरोमणि नामा, गंगाराम सुवन सुख धामा ।।1।।
धन्य सो नगर जहां पे जाये , देवकीनन्दन नाम सुहाये ।।2।।
धन्य पितुहि जिन्ह पालन कीन्हा, जगती ले भक्ति वर दीन्हा ।।3।।
धन्य गायत्री प्रिया प्रवीणा ,जिन पति संग भक्ति रस लीन्हा ।।4।।
पुनि पुनि धन्यहि सन्तति सारी, संयमी, सुशील कठिन व्रत धारी ।।5।।
वैश्य वंश जस ध्वजा फराई , घर घर बाबा ज्योति जलाई ।।6।।
सौम्य स्वभाव, विमल, वैरागी, गंगाराम चरण अनुरागी ।।7।।
सबहि मान प्रिय आप अमानी, सहज सही सब कुजन कुबानी ।।8।।
निष्ठावान, निपुण, नय नागर, मोह निशा के लिये दिवाकर ।।9।।
प्रभु आज्ञा सपनेहुं मन मानी, मन्दिर बनवाने की ठानी ।।10।।
निज बन्धु खोदी मग खाई ,मन महुं त्रास तनिक नहिं लाई ।।11।।
पामर जन बहु बात बनाई, मारे तीर विष वचन बुझाई ।।12।।
गंगाराम जेहि जनहि निहारे, कोटि कुटिल क्या करहि बिचारे ।।13।।
मन सब भांति भयेउ अशंका, बजा दिया जग जीत का डंका ।।14।।
भागीरथ जस गंगा आनी, तेहि करणी कीन्ही बड़ज्ञानी ।।15।।
आये सकल देव समुदाई, विश्वकर्मा ने नींव धराई ।।16।।
बन्यो शीघ्र झुंझुनूं मंह धामा, पंचदेव मन्दिर अभिरामा ।।17।।
सह परिजन तंह डेरा कीन्हा, दुर्जन दुराभाव जब चिन्हा ।।18।।
देव हेतु तनु मनु धनु त्यागा, अविरल भक्ति का वर मांगा ।।19।।
प्रभु प्रसाद कर सब धन बांट्यो,जन जन को सब संकट काट्यो।।20।।

एकहि व्रत और एकहि नेमा, पावन नाम जो रटहि सप्रेमा ।।21।।

जग हित नित संकट सहे भारी, मान अमान व रोष बिसारी ।।22।।

जीवन सकल कियो संग्रामा, संतति सम्बल प्रेरक वामा ।।23।।

निज निर्वाणहि अवसर जानी, उर पीड़ा निज मुखहि बखानी ।।24।।

कलि कलेष द्वन्द चहुं ओरा, दो पग रखने को नहीं ठोरा ।।25।।

निश्चय रूप भगत वर बानी, समुझि सकी नहीं बुद्धि अयानी ।।26।।

मुख ते गंगाराम उचारे, तनहि त्यागि प्रभु धाम सिधारे ।।27।।

महिमा एको न जानन पाई, ज्योति ज्योति के मांहि समाई ।।28।।

चढ़हि चिता बहु रूप बनायो, भक्तिहि सत्य प्रमाण दिखायो ।।29।।

गायत्री ने विनती कीन्हीं , सूर्यदेव निज साखी दीन्हीं ।।30।।

चमत्कार पावक मंह कीन्हा , भुजा उठा जग आशीष दीन्हा ।।31।।

असुरन हेतु खड़ग समानू , मुनि मन कमल हेतु जनु भानू ।।32।।

शीश प्रकट भई सुरसरि धारा, पल में पुनित किये जग सारा ।।33।।

बालरूप तब आपहिं धरहिं, सुरन सबहि मिल जय धुनि करहिं ।।34।।

जड़ चेतन, चेतन जड़ होई , चित्र लिखित से भये सब कोई ।।35।।

शारद शेष सकहि नहीं बरणी , देवकीनन्दन करि जस करणी ।।36।।

गंगाराम भजन जहं होहहिं , भक्त शिरोमणि अवश्यहि सोहहिं ।।37।।

देवकीनन्दन के अवराधे , बाबा कारज सकलहि साधे ।।38।।

जो नित यह चालीसा गावे , कामहि कटे भक्ति उर आवे ।।39।।

देवकीनन्दन पद चित लावे , जग सुख भोग अमर पद पावे ।।40।।

दोहा.- मम मन माया में बन्ध्यो, चित दौड़े चहुं ओर ।
अब तो भक्त शिरोमणि, निज चरणन दो ठौर ।।
जग के बन्धन काटकर , मेटो मम संताप ।
बाबा गंगाराम सहित, हृदय विराजो आप ।।